दैविकी का दिन

(दैवकीर दिन)

अरूपा पटैंगीया कलिता

अनुवाद:

डॉ रीतामणि वैश्य

दैवकी का दिन

असमिया कहानी

अरूपा पटैंगीया कलिता

अनुवाद: डॉ. रीतामणि वैश्य

कथाकार का परिचय

अरूपा पटैंगीया कलिता

जन्म - सन् 1956

अरूपा पटैंगीया कलिता असमिया साहित्य की एक प्रमुख कथाकार हैं। आप टैंगला महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की अध्यापिका हैं। 'मृगनाभि' (सन् 1987), 'अयनान्त' (सन् 1994) और 'फेलानी' (सन् 2007) आपके उपन्यास हैं।'मेपोल हाबिर रैंग' (सन् 1989), 'मरूयात्रा आरू अन्यान्य' (सन् 1992),'मरूभूमित मेनका आरू अन्यान्य' (सन् 1995),'देउपाहारर भग्नस्तुपत' (सन् 1999), 'काँइटत केतेकी' (सन् 1999), 'पाच चोतालर कथकता' (सन् 2000), 'अरूणामिर स्वदेश' (सन् 2000),'मिलेनियामर सपोन' (सन् 2002), 'आलेकजान बानुर जान'(सन् 2005), 'कुरोशवोवार सपोन, मोर सपोन, सिहँतर सपोन'(सन् 2007), 'राडा माटिर पाहाराटो'(सन् 2010), 'पाहार, नदी, सागरआरू मानुह' (सन् 2010),'सोणाली ईगले कणी पारिले, बेलिये उमनि दिले, (सन् 2010) और 'मरियम आष्टिन अथवा हीरा बरूवा' (सन् 2012) आपके कहानी-संग्रह हैं। आप साहित्य संस्कृतिमूलक पत्रिका 'दामन' के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है।

पटैंगीया की रचनाएँ पाठकों द्वारा बहुल समादृत हैं। आपकी कहानियाँ हताशा और हृदयहीनता से ऊसर हुई संसार के पात्रों में विद्रोह की भाषा खोज निकालती हैं। कहानिकार की इस तरह की कहानियाँ के पात्र पाठकों सोचने के लिए विवश करते हैं।

पटैंगीया अपनी साहित्य –कृति के लिए कई पुरस्करों से विभूषित हुई हैं 1 सन् 1993 में पश्चिम बंगाल के 'साहित्य –सेतु' शीर्षक लिटन मैगजिन की ओर से आपको 'शैलेश चन्द्र दासगुप्ता साहित्य-सेतु पुरस्कार' दिया जाता है। सन् 1998 में दिल्ली की 'कथा' शीर्षक साहित्य-संस्कृतिमूलक अनुष्ठान आपको 'कथा बँटा' से पुरस्कृत है। सन् 1998 में असम साहित्य सभा द्वारा घोषित 'बासंती स्मृति पुरस्कार' लेखिका सविन प्रत्याख्यान करती हैं। क्योंकि वे साहित्य सृष्टि के उत्कर्ष के विचार में लिंगभेद अप्रासंगिक मालती हैं। सन् 1998 में असम लेखिका संस्था 'प्रवीणा शइकीया साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित करती है।

'दैवकीर दिन' का अनूदित रूप है 'दैवकी का दिन'। पटैंगीया की प्रस्तुत कहानी अत्यन्त ही सशक्त है। आज के तथाकथित सभ्य समाज में फैली जाति संबंधी मान्यताओं पर आघात किया गया है। उच्च जाति की नीचता का खुला दस्तावेज है 'दैवकी का दिन '।

दैवकी का दिन

मूल : दैवकीर दिन

अरूपा पटैंगीया कलिता

'ले जा बाबू, ले जा। बीस रुपये दे और ले जा। एक मछली लेकर कितना समय बैठी रहूँगी ?' अंडे लगी बूढ़ी मछली को बाँस की एक पतली छड़ी से बाँध कर दैवकी ने अपनी खचिया जल्दी-जल्दी समेट ली। बाजार के उस ओर बैठे मनो को उसने एक सीटी बजाकर देखा, ' अरे मनो ' कोई जवाब नहीं मिला। मतलब वे लोग चली गईं। उसे ही अंधेरा होने तक रुकना पड़ा। ऐसी मछलियाँ वह पानी के भाव कैसे दे सकती है? कुछ दिन पहले तक व्यापारी उन लोगों को अच्छी रकम ही देते थे। लेकिन पिछले कुछ दिनों से जाने क्या हुआ, पैसा देते समय, उन्हें अपनी देह का मांस देने जैसा लगने लगा है। सुना है उन्हें भी किसी को ढेर सारा पैसा देना पड़ता है। दैवकी ने मुँह में ताम्बुल भरकर कहा, " मेखला पहननेवालों, खखार खानेवालों को तो मुफ्त में ही मछली चाहिए, साला गीदड़ खानेवाले की जात!" मोटी-मोटी आवाज से गाली देकर दैवकी थोड़ा शान्त हुई।

बाजार में यहाँ-वहाँ ढिबरी, मोमबत्ती जल रही है। दैवकी के पास ही आलू-प्याज के व्यापारी रघुवीर ने उसके नुकीले आलू-प्याज के ढेरों में दो मोमबत्तियाँ जला दीं। उसने मोमबत्तियों की ओर देखकर हाथ जोड़ा और फिर दैवकी की ओर देखकर कहा, " क्या हुआ दैवकी बाइ क्या आज घर नहीं जाना है?" जांघ पर एक थाप मारकर देवकी गरज उठी, "न जाकर क्या तेरा सोना जैसा मुखड़ा देखती रहूँगी?" साग-सब्जी के व्यापारी यदुराम हिस्सों में सब्जियों को सजाकर पानी छिड़क रहा है। उसके शहरी बाबू-ग्राहकों के आने का समय हुआ है। रघुवीर और यदुराम के बीच मसाले की छोटी दूकान लेकर बैठनेवाला गणेश आज नहीं आया है। यदुराम ने उसके नींबुओं को भी लो और आकार भेदं से सजाकर दूकान फैला दी है। सारा का सारा दिन यदुराम का सब्जियों के सजाने के काम में लगे रहना दैवकी को बच्चों का खेल जैसा लगता है। उसे चुभाने के लिए वह पूछ बैठी, " गणेश का आज क्या हुआ?" यदुराम ने झींका का ढेर ठीक-ठाक करते हुए फुसफुस आवाज में कहा, " वह कैसे आयेगा ? पुल में बम देकर मलिटरी के मरने के बाद से उसके गाँव में सबके लिए मुश्किलें बढ़ गई हैं, सारा का

सारा गाँव मलिटरी ने कुचल डाली है।" घटनाएँ दैवकी ने भी सुनी हैं। अचानक उसका शरीर थिरक उठा।

बाजार का अंधेरा घना होने लगा। देवकी का दिल धक्-,धक् करने लगा। व्यापारी को मछली की खचिया अगर दे देती तो अब तक वह भात खाकर सो चुकी होती। मनो ने भी कहा था, वही दो पैसे की आशा में बैठी रही। नुकसान नहीं हुआ है, सौदा लेने के बाद भी दो पैसे हाथ में रह जायेंगे। और दो-चार पैसे इकट्ठे होने से ही वह खुटी काटेगी। टाउन के अस्पताल में बूढ़ी सास की आँखों की मोतियाबिंद काट सकने पर एक बड़ी चिन्ता से राहत मिलेगी। उसके देर होने के कारण शायद बुढ़िया ने टटोल-टटोलकर भात का बन्दोबस्त किया होगा। बुढ़िया को भात में' डाले एक आलू मिलने से तेल और नमक से लोई बनाकर खाने का बड़ा शौक है। दैवकी ने आधा किलो आलू लिया। इतना धन देकर कहाँ आलू खरीदा जाता हैं? आज किस्मत अच्छी होने के कारण ही यह संभव हुआ। उसने दो किलो चावल भी लिये। घर में भी तीन-चार किलो होंगे। लड़के ने कुछ मछलियों का बन्दोबस्त किया होगा। चावल, आलू की गठरी लेकर दैवकी बाजार से निकली। मेखला के खोंस से उसने पैसे निकालकर ब्लाउज के अन्दर रखे। उसके बाद वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगी। बुढ़िया बार-बार पूछ रही होगी, " तेरी माँ आई कि नहीं ? कहाँ मर गई हैजामरी'।" दोनों बच्चे बुढ़िया को क्या कम तंग करते हैं ? कानी बुढ़िया के लिए दैवकी का मन खड़िया से जमीन पर उड़ेले कवई मछली की तरह छटपटाने लगा।

टाउन के रास्ते के लाइट एकाएक जल उठे। दूकानें रोशनी से चमक उठीं। बाजार की ढिबरी की टिमटिमाती रोशनी से आकर चमकती रोशनी में दैवकी को अपने नंगे होने का अहसास हुआ। ब्लाउज के नीचे के दोनों बटन नहीं हैं। पेटीकोट के बिना पहनी मेखला पिंडली ढक नहीं पाई है। सकरे चादर ने टूटे बटन के ब्लाउज को जैसे बार-बार उकस दिया है। रास्ते के सारे लोग मानो उसकी देह की ओर ही देख रहे हैं। किसी ने मानो उसकी ओर देखकर सीटी मारी। उसने कांख के नीचे दबाये रखे खोखरे को आलू चावल की गठरी के साथ सिर पर उठा लिया। टोकरी के नीचे के अंधेरे में छुपकर वह सर नीचा करती हुई मेखला से सतप सतप आवाज निकालकर तेज चलने लगी।

लोगों की भीड़ से पार होकर उसने शहर के दक्षिण कोने के नदी-तट के गाँव तक जानेवाले कच्ची सड़क पर पैर रखे। लोग, रोशनी सब कम होते गये। सड़क के किनारों। के मैदान छपछपाहट भरे अंधकार में डूबने लगे